Topic 34

भ्वादिगण उभयपदी धातुएं — 1

रिङ् शयग्लिङ्क्षु ।

शे यकि यादावार्धधातुके लिङि च ऋतो रिङ् आदेशः स्यात् । रीङि प्रकृते रिङ् विधानसामर्थ्याद्दीर्घो न । भ्रियात् ।

उश्च ।

ऋवर्णात् परौ झलादी लिङ्सिचौ कितौ स्तस्तङि । भृषीष्ट । भृषीयास्ताम् । अभार्षीत् । अभार्ष्टाम् । अभार्षुः । अभार्षीः

ह्रस्वादङ्गात् ।

सिचो लोपो झलि । अभृत । अभृषाताम् । अभरिष्यत्, अभरिष्यत । हृञ् हरणे । हरति, हरते । जहार, जह्रे । जहर्थ । जह्रिव । जह्रिम । जह्रिषे । अहरत्, हर्ता । हरिष्यति, हरिष्यते । हरतु, हरताम् । अहरत् । अहरत । हरेत्, हरेत, ह्रियात् । हृषीष्ट । हृषीयास्ताम् । अहार्षीत्, अहृत् । अहरिष्यत्, अहरिष्यत । धृञ् धारणे । धरति, धरते । णीञ् प्रापणे । नयति, नयते । डुपचष् पाके । पचति, पचते । पपाच । पेचिथ, पपक्थ । पेचे । पक्ता । भज सेवायाम् । भजति, भजते । बभाज, भेजे, भक्ता । भक्ष्यति, भक्ष्यते । अभाक्षीत्, अभक्त । अभक्षाताम् । यज देवपूजा सङ्गतिकरणदानेषु । यजति । यजते ।

झल परे रहने पर ह्रस्वान्त अङ्ग से पर सकार का लोप होता है।

P.T.O

उदाहरण के लिए 'भू' धातु से लुङ् लकार में प्रथमपुरुष - एकवचन की विवक्षा में 'त' प्रत्यय और पुनः च्लि - सिच् आदि होकर । अभू सत' रूप बनता है । इस अवस्था में झल् - तकार परे होने के कारण प्रकृत सूत्र से ह्रस्वान्त अङ्ग 'अभू' से पर सकार का लोप होजाता है और रूप बनता है । अभूत' ।

लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् ।

वच्यादीनां ग्रह्यादीनां चाभ्यासस्य सम्प्रसारणं लिटि । इयाज ।

लिट् परे होने पर वच् आदि और ग्रह आदि दोनों गण की धातुओं के अभ्यास को सम्प्रसारण होता है । उदाहरण के लिए 'यज्' धातु से लिट् लकार में प्रथमपुरुष - एकवचन की विवक्षा में तिप्, णल्, द्वित्व और अभ्यास कार्य होकर 'य यज् अ' रूप बनता है । इस स्थिति में लिट् 'अ' परे होने के कारण प्रकृत सूत्र से वच्यादि गण की 'यज्' धातु के अभ्यास - यकार को सम्प्रसारण - इकार होकर 'इ अ यज् अ' रूप बनेगा । यहाँ अकार का पूर्वरूप और उपधा-वृद्धि होकर 'इयाज' रूप सिद्ध होता है ।

वचि - स्वपि - यजादीनां किति ।

वचिस्वपियजादीनां च सम्प्रसारणं स्यात् किति ।

ऊचतुः । ऊचुः । उवचिथ, उवक्थ । ऊचिव । ऊचिम ।

कित प्रत्यय परे होने पर वच्, स्वप और यज् आदि धातुओं को सम्प्रसारण होता है । यह सम्प्रसारण धातुगत य, व, र और लकार के ही स्थान पर होगा ।

उदाहरण के लिए 'यज्' धातु से लिट् लकार में प्रथमपुरुष - द्विवचन की विवक्षा में 'तस्' और पुनः उसके स्थान पर परस्मैपद 'अतुस्' होने पर 'यज् अतुस्' रूप बनता है। इस अवस्था में कित् 'अतुस्' परे होने के कारण प्रकृत सूत्र से 'यज्' के अकार के स्थान पर इकार सम्प्रसारण होकर 'इ अ ज् अतुस्' 'इजतुस्' रूप बनेगा। यहाँ पर अकार को पूर्वरूप, पुनः 'इज्' को द्वित्व और अभ्यास - कार्य आदि होकर 'ईजतुः' रूप सिद्ध होता है।